जॉन लोगी बायर्ड (1888-1946)

और अन्य टेलीविज़न आविष्कारक

जॉन लोगी बायर्ड की नए आविष्कारों में बहुत रूचि थी. जब वो बहुत छोटा था तब उसने अपने घर और अपने दोस्त के घर को, एक घरेलू टेलीफोन एक्सचेंज से जोड़ा. (वैसे उसने जो तार खींचे, वो सड़क पर बहुत नीचे लटके थे.) बाद में उसकी रुचि टेलीविज़न में जगी.

जॉन ने दिल में पहला, चलने वाला टेलीविज़न बनाने का पक्का इरादा बनाया. पर उसने जो प्रणाली चुनी वो आज के इलेक्ट्रॉनिक टेलीविज़न से बहुत अलग थी. उसका सिस्टम यांत्रिक था जिसमें घूमती हुई चकत्तियां छोटे-छोटे चित्र पैदा करती थीं. क्योंकि उसके पास पूँजी नहीं थी इसलिए वो सब कुछ पुराने कबाड़ से अपने घर में ही बनाने को मज़बूर था.

कभी-कभी चकत्तियां नियंत्रण के बाहर हो जाती थीं, और उनसे पूरे कमरे में टूटा कांच और धातु फ़ैल जाता था. पर फिर भी जॉन ने अपना काम ज़ारी रखा.

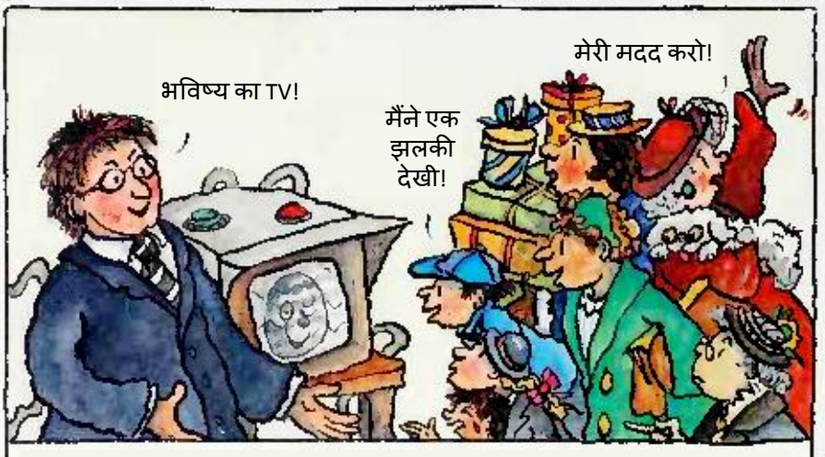

1925 में लंदन के एक डिपार्टमेंटल स्टोर में जॉन ने दुनिया के पहले TV का डेमोंस्ट्रेशन दिया.

उसके एक साल बाद वैज्ञानिकों का एक समूह जॉन के छोटे किचन में उसका TV डेमोंस्ट्रेशन देखने के लिए जमा हुआ. वैज्ञानिकों को वो बहुत पसंद आया और उसके बाद जॉन BBC को प्रायोगिक TV कार्यक्रम दिखाने के लिए मना पाया.

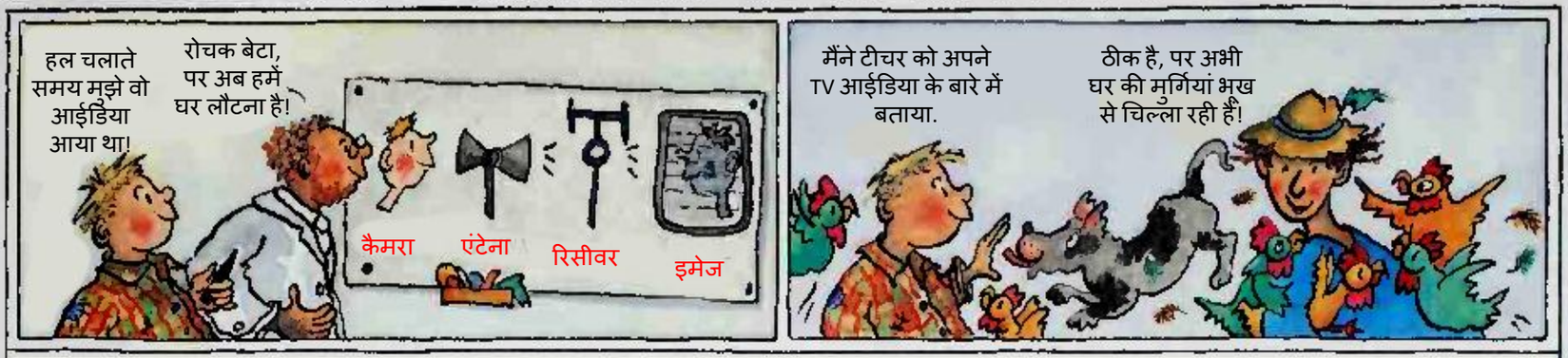

पर दुर्भाग्य से जॉन का मैकेनिकल सिस्टम कोई ख़ास अच्छा नहीं था. उस समय कई अन्य अन्वेषक इलेक्ट्रानिक TV पर शोध कर रहे थे जो कहीं बेहतर था. फिलो टी. फार्न्सवर्थ, उटाह के किसान का बेटा, वो पहला इंसान था जिसने 1922 में, पहली बार इलेक्ट्रॉनिक TV का सुझाव दिया. उस समय फिलो सिर्फ 14 साल का था.

1926 में जापानी आविष्कारक केंजीरो तकयानगी ने पहले इलेक्ट्रॉनिक TV का निर्माण किया. पर रूसी-अमरीकी आविष्कारक व्लादिमीर ज़वायकिन ने इमेज रिकॉर्ड करने और उन्हें डिस्प्ले करने के पहले उपकरण बनाए. वो असली TV का जन्म था. 1950 में घर-घर में इलेक्ट्रॉनिक TV लगने लगे. इसका पूरा श्रेय अनेकों आविष्कारकों की अथक मेहनत और लगन को जाता है.